INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

ईको चैंबर एवं इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स: एक शैक्षणिक विश्लेषण

(Echo Chamber and the Internet and Social Networking Sites: An Educational Analysis)

सुरेंद्र कुमार
(शोधार्थी)
अनुसंधानकेंद्र - दाऊ दयाल महिला पी.जी. कॉलेज,
फ़िरोज़ाबाद.
विश्वविद्यालय - डॉ.भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत)
E-mail: kumar.surendra459@gmail.com

प्रो.(डॉ.) विनीता गुप्ता
(निर्देशिका)
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
अनुसंधानकेंद्र - दाऊ दयाल महिला पी.जी. कॉलेज,
फ़िरोज़ाबाद.
विश्वविद्यालय - डॉ.भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2025-59468158/IRJHIS2507011

सारांश (Abstract):

21वीं सदी में डिजिटल क्रांति ने सूचना के प्रसार की गति को तीव्र किया है किंतु साथ ही व्यक्तियों की सोच, व्यवहार और सामाजिक संवाद को प्रभावित करते हुए 'ईको चैंबर' जैसी अवधारणाओं को जन्म दिया है। ईको चैंबर वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति केवल उन्हीं विचारों और सूचनाओं के संपर्क में आता है जो उसकी पूर्व मान्यताओं की पुष्टि करते हैं। यह प्रवृत्ति सोशल नेटवर्किंग साइट्स के एल्गोरिदमिक कार्यप्रणाली के कारण और भी तीव्र हो गई है, जिससे पुष्टि पूर्वाग्रह, वैचारिक ध्रुवीकरण और आलोचनात्मक चिंतन में ह्रास जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। यह लेख ईको चैंबर की संकल्पना, डिजिटल परिप्रेक्ष्य में इसके निर्माण, तथा शैक्षणिक प्रणाली पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करता है। साथ ही, शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साक्षरता, बहुस्रोत-आधारित शिक्षण, संवादात्मक गतिविधियों तथा नीति-निर्माण के माध्यम से इसके समाधान हेतु संभावित रणनीतियाँ भी प्रस्तुत करता है।

मूलशब्द : *ईको चैंबर, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, पुष्टि पूर्वाग्रह आलोचनात्मक चिंतन, डिजिटल साक्षरता, वैचारिक ध्रुवीकरण, शैक्षणिक निष्पक्षता, समावेशी शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी*

1. प्रस्तावना :

21वीं सदी का युग डिजिटल क्रांति का युग कहा जाता है। इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने न केवल सूचना के आदान-प्रदान को गति दी है, बल्कि लोगों की सोच, व्यवहार, मूल्यबोध, और संवाद की शैली को भी प्रभावित किया है। जब व्यक्ति किसी विचारधारा, समुदाय या सूचना के दायरे में सीमित हो जाता है और भिन्न विचारों के प्रति उदासीन या प्रतिरोधी हो जाता है, तब वह 'ईको चैंबर' में प्रवेश करता है। यह स्थिति शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रियाओं को

प्रभावित करती है और समावेशी, आलोचनात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।इस लेख में 'ईको चैंबर' की संकल्पना, उसके कारण और प्रभाव, तथा इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स के परिप्रेक्ष्य में इसके शैक्षणिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, शिक्षा प्रणाली में इसके सकारात्मक उपयोग की संभावनाओं तथा इससे उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए संभावित रणनीतियों पर भी विचार किया गया है।

2. ईको चैंबर: संकल्पना और पृष्ठभूमि:

'ईको चैंबर' मूल रूप से एक ध्वनि संबंधी शब्द है जिसमें एक बंद स्थान में ध्वनि गूंजती रहती है और वही ध्वनि बार-बार सुनाई देती है। इस धारणा को संज्ञानात्मक और सामाजिक मनोविज्ञान में रूपांतरित किया गया है जहां यह एक ऐसी स्थिति का वर्णन करता है जिसमें व्यक्ति केवल उन्हीं विचारों, दृष्टिकोणों या सूचनाओं को ग्रहण करताहै, जो उसकी मौजूदा मान्यताओं और धारणाओं की पुष्टि करते हैं**जेम्स सुरोविएकी(अमेरिकी लेखक और पत्रकार)** के अनुसार- *"लोग अपने ही विचारों की एक तरह की ईको चैंबर में रहते हैं। वे केवल उसी जानकारी पर ध्यान देते हैं जो उनकी धारणाओं को सही साबित करती है। और जो जानकारी उनकी सोच से मेल नहीं खाती, उसे वे नजरअंदाज कर देते हैं।"*

2.1 परिभाषा- कैससनस्टीन (2001) के अनुसार, "ईको चैंबर एक ऐसा परिवेश है जहाँ व्यक्ति केवल उन्हीं सूचनाओं या विचारों के संपर्क में आता है, जो उसकी अपनी धारणाओं की पुष्टि और समर्थन करते हैं।"

2.2 डिजिटल युग में ईको चैंबर की उत्पत्ति :

इंटरनेट, विशेषकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, ट्विटर/ एक्स, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि उपयोगकर्ताओं को उनकी पसंद, व्यवहार और विचारधारा के अनुसार सूचनाएं प्रदान करते हैं। एल्गोरिदम उपयोगकर्ता की पुरानी गतिविधियों के आधार पर यह निर्धारित करता है कि आगे कौन-सी सामग्री दिखाई जाएगी। इससे उपयोगकर्ता एक सूचना-बबल में फंस जाते हैं, जो 'फिल्टर बबल' और 'ईको चैंबर' की स्थिति को जन्म देता है।**(विकिपीडिया)**

3. सोशल नेटवर्किंग साइट्स और ईको चैंबर का निर्माण :

सोशल नेटवर्किंग साइट्स ईको चैंबर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ईको चैंबर एक ऐसी स्थिति है जहाँ व्यक्ति केवल उन्हीं सूचनाओं और विचारों के संपर्क में आते हैं जो उनके मौजूदा विश्वासों और विचारों की पुष्टि केरत हैं। यह एक बंद प्रणाली की तरह काम करता है जहाँ समान विचारधारा वाले लोग एक-दूसरे के विचारों को दोहराते और सुदृढ़ करते हैं, जिससे बाहरी या विपरीत विचारों का प्रवेश मुश्किल हो जाता है**(जीसीएफग्लोबल)**।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर एल्गोरिदम इसके लिए जिम्मेदार होते हैं। ये एल्गोरिदम उपयोगकर्ता के पिछले क्लिक, लाइक और देखे गए कंटेंट के आधार पर उन्हें वैसी ही सामग्री दिखाते हैं, जिससे 'फिल्टर बबल' बनते हैं **(डॉ. उमेशकुमार, 2024, वेबदुनिया)**। उदाहरण के लिए, यदि कोई उपयोगकर्ता किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा से संबंधित सामग्री से जुड़ता है तो एल्गोरिदम उसे उसी तरह की और सामग्री दिखाएगा, जिससे वह केवल एकतरफा जानकारी प्राप्त करेगा और अन्य दृष्टिकोणों से कट जाएगा। यह 'पुष्टि पूर्वाग्रह को बढ़ावा देता है, जहाँ व्यक्ति उन सूचनाओं को प्राथमिकता देते हैं जो उनके पहले से मौजूद विश्वासों को पुष्ट करती हैं**(जीसीएफग्लोबल)**।परिणामस्वरूप, ईको चैंबर ध्रुवीकरण को बढ़ाते हैं और गलत सूचनाओं के प्रसार को बढ़ावा देते हैंजिससे समाज में समझ और सहिष्णुता कम हो सकती है (Medium)।

3.1 एल्गोरिदम और फिल्टर बबल- एलीपेरिसरने 'दफिल्टरबबल' (2011) में उल्लेख किया कि कैसे इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को केवल उन्हीं सूचनाओंसे जोड़ा जाता है, जो उनकी पिछली पसंद या खोजों पर आधारित होती हैं। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे व्यक्ति को एक सीमित और संकीर्ण सूचना-प्रणाली में बाँध देती है।

3.2 कंफर्मेशन बायस और चयनात्मक ग्रहण - कंफर्मेशन बायस वह प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति उन सूचनाओं को प्राथमिकता देता है जो उसकी पहले से स्थापित मान्यताओं की पुष्टि करती हैं। सोशल मीडिया इस प्रवृत्ति को और बल देता है, जिससे ईको चैंबर और अधिक मजबूत होते हैं।

4. शैक्षणिक संदर्भ में ईको चैंबर का प्रभाव :

शिक्षा केवल सूचना देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विवेक, दृष्टिकोण, तर्क, संवेदनशीलता और समावेशिता विकसित करने का माध्यम है। जब विद्यार्थी केवल एक ही तरह की सूचनाओं के संपर्क में आते हैं,तो उनकी सोच सीमित हो जाती है। इसके प्रभाव अनेक स्तरों पर देखे जा सकते हैं-

4.1 आलोचनात्मक चिंतन का ह्रास - आलोचनात्मक और स्वतंत्र चिंतन का विकास शिक्षा का मूल उद्देश्य है, क्योंकि यही योग्यता विद्यार्थियों को तथ्यों, तर्कों और विचारों के विश्लेषण की क्षमता प्रदान करती है। परंतु जब वे ईको चैंबर जैसी सीमित सूचना-परिस्थितियों में फंस जाते हैं, तो उन्हें केवल उन्हीं विचारों और दृष्टिकोणों का सामना होता है जो उनकी पूर्व मान्यताओं की पुष्टि करते हैं। परिणामस्वरूप, वे विचारों की विविधता और बहुलता से वंचित रह जाते हैं, जो किसी भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण के निर्माण के लिए आवश्यक होती है। इस स्थिति में उनका दृष्टिकोण संकीर्ण हो जाता है और वे वैकल्पिक विचारों या असहमति के प्रति असहिष्णु होने लगते हैं। लंबे समय में यह प्रवृत्ति बौद्धिक जड़ता को जन्म देती है, जिससे न केवल उनका व्यक्तिगत विकास बाधित होता है, बल्कि एक विवेकशील, लोकतांत्रिक और संवादपरक समाज के निर्माण में भी कठिनाई उत्पन्न होती है। अतः यह अत्यावश्यक हो जाता है कि शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को सूचना के विविध स्रोतों तक पहुँचाने के साथ-साथ, उन्हें आलोचनात्मक विश्लेषण, विमर्श और भिन्न विचारों के प्रति खुलापन सिखाए।

4.2 वैचारिक ध्रुवीकरण - वैचारिक ध्रुवीकरण आधुनिक डिजिटल युग की एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है, विशेषतः तब जब ईको चैंबर जैसी स्थितियाँ सूचना और संवाद की प्रकृति को एकपक्षीय बना देती हैं। ईको चैंबर में सीमित और समान विचारधाराओं का बार-बार सामना होने के कारण विद्यार्थी अन्य मतों और दृष्टिकोणों को या तो अस्वीकार करने लगते हैं या उन्हें गलत समझते हैं। यह प्रवृत्ति उन्हें सहमतिपूर्ण असहमति की स्वस्थ परंपरा से दूर कर देती है। वैकल्पिक विचारों के प्रति असहिष्णुता बढ़ने लगती है, जिससे संवाद की खुली और तार्किक संस्कृति कमजोर पड़ जाती है। परिणामस्वरूप, बहस और विमर्श जैसे शैक्षणिक अभ्यास—जो कि उच्च स्तरीय चिंतन और लोकतांत्रिक मूल्यों के पोषण के लिए आवश्यक हैं—प्रभावहीन होने लगते हैं। वैचारिक ध्रुवीकरण केवल व्यक्तिगत स्तर पर सीमित नहीं रहता, बल्कि यह संस्थागत और सामाजिक स्तर पर भी विभाजन को जन्म दे सकता है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली और डिजिटल मंच ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहाँ विविध दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान, सहिष्णुता और संवाद की भावना को प्रोत्साहन मिले।

4.3 शैक्षणिक निष्पक्षता पर प्रभाव - शोध एवं अध्ययन के क्षेत्र में निष्पक्षता, तटस्थता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अत्यंत आवश्यक गुण माना जाता है, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से किसी भी समस्या, अवधारणा या परिघटना का सम्यक विश्लेषण संभव होता है। परंतु जब ज्ञान या सूचना का स्रोत ही पूर्वग्रहपूर्ण, एकपक्षीय या सीमित हो—जैसा कि ईको चैंबर या फिल्टर बबल की स्थिति में होता है—तो शोध की वस्तुनिष्ठता और विश्वसनीयता पर स्वाभाविक रूप से प्रश्नचिह्न लगने लगते हैं। एकपक्षीय सूचना से प्रेरित अध्ययन न केवल अधूरी या भ्रामक निष्कर्षों की ओर ले जाते हैं, बल्कि वे शैक्षणिक ईमानदारी और अनुसंधान की मूल आत्मा को भी आघात पहुँचाते हैं। ऐसे संदर्भ में शोधकर्ता की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह स्रोतों की विविधता बनाए रखे, परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों का समावेश करे, तथा तथ्यों का निष्पक्ष मूल्यांकन करते

हुए सुसंगत और संतुलित निष्कर्ष तक पहुँचे। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मूल आधार ही यह है कि निष्कर्ष प्रमाण और तर्क पर आधारित हों, न कि पूर्वनिर्धारित धारणाओं या एकतरफा सूचनाओं पर।

4.4 डिजिटल साक्षरता की कमी - डिजिटल साक्षरता की कमी आज के शिक्षार्थियों के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरी है। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर सूचनाओं की बाढ़ के बीच, अनेक विद्यार्थी बिना उनकी सत्यता, संदर्भ या स्रोत की जांच किए ही जानकारी को स्वीकार कर लेते हैं और कभी-कभी अनजाने में उसे आगे साझा भी कर देते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण 'फेक न्यूज', अफवाहें और मिथ्या सूचनाएँ तीव्र गति से फैलती हैं, जिससे समाज में भ्रम, असमंजस और वैचारिक असंतुलन उत्पन्न होता है। डिजिटल मंचों पर ऐसी असत्य सूचनाओं का प्रसार न केवल व्यक्तियों को गुमराह करता है, बल्कि यह सामाजिक सौहार्द, लोकतांत्रिक संवाद और तर्कसंगत सोच को भी बाधित करता है। इस स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को प्रारंभिक स्तर से ही डिजिटल साक्षरता, मीडिया साक्षरता तथा सत्यापन कौशल सिखाया जाए, जिससे वे किसी भी जानकारी की प्रामाणिकता का मूल्यांकन कर सकें और एक जिम्मेदार डिजिटल नागरिक की भूमिका निभा सकें।

5. शिक्षण-प्रशिक्षण में उत्पन्न चुनौतियाँ :

5.1 शिक्षक-विद्यार्थी संवाद की गुणवत्ता में गिरावट:

जब विद्यार्थी पूर्वग्रहों या पूर्वनिर्धारित धारणाओं के साथ कक्षा में भाग लेते हैं तो वे नई जानकारी या विचारों को सहजता से ग्रहण नहीं कर पाते। ऐसे में शिक्षक के लिए आलोचनात्मक चर्चा को संचालित करना कठिन हो जाता है। शिक्षक की भूमिका केवल विषयवस्तु देने तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि उन्हें विद्यार्थियों को तर्क, साक्ष्य और वैकल्पिक दृष्टिकोणों की ओर उन्मुख करना पड़ता है, जो चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।

5.2 पाठ्यचर्या में विविध दृष्टिकोणों का अभाव :

जब शिक्षण सामग्री या पाठ्यक्रम में विचारों की बहुलता नहीं होती, तो छात्रों को विषय का केवल एक पक्ष ज्ञात होता है। इससे वे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक या वैचारिक दृष्टिकोणों से परिचित नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप, उनकी सोच सीमित हो जाती है और वे अपनी ही मान्यताओं को अंतिम सत्य मानने लगते हैं जिससे ईको चैंबर की मानसिकता को बल मिलता है।

5.3 सामाजिक समरसता में बाधा :

ईको चैंबर की प्रवृत्ति विद्यार्थियों के भीतर "हम बनाम वे" का भाव विकसित करती है। वे केवल अपनी विचारधारा या समूह के प्रति वफादारी प्रदर्शित करते हैं और विरोधी दृष्टिकोण को अस्वीकार कर देते हैं। इससे कक्षा में संवादात्मक संस्कृति, विचार-विमर्श की क्षमता और सामाजिक समरसता बाधित होती है, जो समावेशी शिक्षा के मूल्यों के विपरीत है।

5.4 शिक्षकों की डिजिटल प्रशिक्षण में कमी :

डिजिटल युग में शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे तकनीकी उपकरणों, ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रभावी प्रयोग करें। परंतु अनेक शिक्षकों को डिजिटल साक्षरता या तकनीकी कौशल की पूर्ण जानकारी नहीं होती, जिससे वे विद्यार्थियों को ऑनलाइन गलत सूचनाओं से जूझने या विविध स्रोतों के विश्लेषण में सहायता नहीं कर पाते।

5.5 आलोचनात्मक सोच विकसित करने में कठिनाई :

जब विद्यार्थी केवल एकपक्षीय सूचना-स्रोतों से जुड़े रहते हैं, तो उनके लिए विचारों का विश्लेषण, तुलना और

मूल्यांकन करना कठिन हो जाता है। शिक्षक जब वैकल्पिक या चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करते ,हैंतो विद्यार्थी उन्हें अस्वीकार कर देते हैं। इससे कक्षा में गहन विमर्श और आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देना कठिन हो जाता है।

5.6 मूल्य-आधारित शिक्षा में गिरावट :

ईको चैंबर की स्थिति में विद्यार्थी केवल 'जानकारी' तक सीमित रहते हैं, और 'मूल्य' जैसे सहिष्णुता, संवाद, विविधता को स्वीकार करने की भावना कमजोर हो जाती है। इससे नैतिक शिक्षा, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का क्षरण होता है, जो शिक्षण-प्रशिक्षण की दीर्घकालिक सफलता के लिए हानिकारक है।

6. सकारात्मक संभावनाएँ और अवसर:

ईको चैंबर एक समस्या के रूप में उभरी है, लेकिन यदि सोशल नेटवर्किंग साइट्स का विवेकपूर्ण एवं शैक्षणिक उपयोग किया जाए तो यह सशक्त शिक्षण उपकरण बन सकते हैं।

6.1 वैश्विक दृष्टिकोण का विकास - वैश्विक दृष्टिकोण का विकास आज की शिक्षा प्रणाली की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। इंटरनेट पर उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सामग्री, ओपन ऑनलाइन कोर्सेज, वेबिनार, वर्चुअल कॉन्फ्रेंस तथा शैक्षणिक पोर्टल्स के माध्यम से विद्यार्थियों को न केवल विभिन्न विषयों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि वे विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक दृष्टिकोणों से भी परिचित होते हैं। यह वैश्विक अनावरण उनके सोचने के दायरे को व्यापक बनाता है और उन्हें बहुसांस्कृतिक संवाद के लिए तैयार करता है। साथ ही, वे अंतरराष्ट्रीय समस्याओं जैसे—जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, मानवाधिकार, वैश्विक अर्थव्यवस्था आदि पर भी गहन दृष्टि विकसित कर पाते हैं। इस प्रकार की डिजिटल सुविधा उन्हें केवल एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें एक 'वैश्विक नागरिक' के रूप में विकसित करती है, जो विविध विचारों को समझने, स्वीकारने और उनके साथ सकारात्मक संवाद करने में सक्षम होता है।

6.2 विविधता की समझ - सोशल मीडिया आज न केवल सूचना साझा करने का माध्यम है, बल्कि यह विविधताओं को समझने और स्वीकारने का एक प्रभावशाली मंच भी बन गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी भिन्न-भिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, जातियों, धर्मों और भौगोलिक क्षेत्रों के लोगों से सीधे संवाद स्थापित कर सकते हैं। यह अंतर-सांस्कृतिक संपर्क उनकी सोच को व्यापक बनाता है और पूर्वग्रहों को तोड़ने में सहायक होता है। ऐसे संवादों से छात्रों में समावेशिता, सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान का भाव विकसित होता है। ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*** भी ऐसे अनुभवात्मक और बहुसांस्कृतिक शिक्षण को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे विद्यार्थी केवल अकादमिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी संवेदनशील और जागरूक नागरिक बन सकें। इस प्रकार, सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग विविधता की समझ को गहरा करने का एक शक्तिशाली माध्यम बन सकता है।

6.3 डिजिटल लर्निंग के नए अवसर - कोविड-19 महामारी ने वैश्विक शिक्षा प्रणाली को एक नए मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया, जहाँ पारंपरिक कक्षा शिक्षण के स्थान पर डिजिटल माध्यमों का उपयोग तेजी से बढ़ा। ऑनलाइन कक्षाएँ, वेबिनार, लर्निंग ऐप्स, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज और वर्चुअल प्लेटफ़ॉर्म्स ने यह सिद्ध कर दिया कि इंटरनेट, यदि सही दिशा में और विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग किया जाए, तो यह शिक्षा का एक प्रभावशाली और समावेशी माध्यम बन सकता है। इसने शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को नई तकनीकी दक्षताओं से परिचित कराया। ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*** भी डिजिटल शिक्षा के विस्तार और नवाचारों को बढ़ावा देने पर बल देती है।

6.4 आत्म-निर्देशित सीखने की क्षमता का विकास - डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स और ऑनलाइन संसाधनों की सहज उपलब्धता ने विद्यार्थियों में ***आत्म-निर्देशित सीखने*** की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया है। अब छात्र अपनी गति से, अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार विषयवस्तु का चयन कर सकते हैं और समयबद्ध तरीके से सीख सकते हैं। यह न केवल

उनकी स्वायत्तता को बढ़ाता है, बल्कि जिम्मेदारी, समय-प्रबंधन और लक्ष्य निर्धारण जैसी जीवन-पयोगी कौशलों का भी विकास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति*2020* भी शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देती है, जहाँ छात्र केवल सूचना के उपभोक्ता नहीं, बल्कि सक्रिय ज्ञान-सृजनकर्ता बनें। आत्म-निर्देशित सीखना विशेष रूप से उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जहाँ नवाचार, अनुसंधान और व्यक्तिगत विकास को अधिक महत्व दिया जाता है।

7. समाधान: शिक्षा प्रणाली में रणनीतियाँ :

7.1 डिजिटल साक्षरता का पाठ्यक्रम में समावेश - डिजिटल साक्षरता का पाठ्यक्रम में समावेश अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वर्तमान युग में सूचनाओं की अधिकता और विविधता के कारण यह सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण हो गया है कि कौन-सी जानकारी विश्वसनीय है और कौन-सी भ्रामक। विद्यार्थियों को यह सिखाना नितांत आवश्यक हो गया है कि वे इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं को केवल स्वीकार न करें, बल्कि उन्हें तर्कसंगत दृष्टिकोण से परखें। इसके लिए उन्हें तथ्यों की पुष्टि करने की क्षमता, स्रोतों की प्रामाणिकता की जांच करने के तरीके, और विभिन्न माध्यमों से प्राप्त जानकारी का तुलनात्मक विश्लेषण करने की योग्यता प्रदान करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। साथ ही, उन्हें यह भी समझाना आवश्यक है कि जानकारी का सतही ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि संदर्भ, उद्देश्य और स्रोत की पृष्ठभूमि को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार की डिजिटल आलोचनात्मक सोच न केवल उनकी व्यक्तिगत समझ को समृद्ध बनाती है, बल्कि उन्हें जिम्मेदार डिजिटल नागरिक भी बनाती है, जो सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन माध्यमों पर फैलने वाली अफवाहों, गलत सूचनाओं और पूर्वाग्रहों से खुद को और समाज को सुरक्षित रख सकते हैं।

7.2 बहुस्रोत-आधारित शिक्षण विधियाँ - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और ***राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023*** के अनुरूप, छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान और निर्णय क्षमता को विकसित करने पर बल देती हैं। शिक्षक छात्रों को एक ही विषय पर समाचार पत्रों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, विशेषज्ञ साक्षात्कारों आदि से जानकारी एकत्र करने के लिए प्रेरित करें। इससे न केवल विषय की गहराई से समझ बढ़ती है, बल्कि विविध दृष्टिकोणों की तुलना कर वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष निकालने की क्षमता भी विकसित होती है। यह पद्धति समावेशी, अनुभवात्मक और 21वीं सदी की आवश्यक दक्षताओं से युक्त शिक्षण सुनिश्चित करती है।

7.3 वाद-विवाद, समूह चर्चा और विचार मंच-वाद-विवाद, समूह चर्चा और विचार मंच जैसे संवादात्मक अभ्यास विद्यार्थियों के बौद्धिक, भाषिक और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*** और ***राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023*** में भी ऐसे शिक्षण तरीकों को बढ़ावा देने की सिफारिश की गई है जो छात्रों में संवाद, सहिष्णुता और आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करें। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नियमित रूप से वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, पुस्तक समीक्षाएँ, पैनल चर्चाएँ और विचार मंच आयोजित किए जाने चाहिए, जहाँ विद्यार्थी विविध दृष्टिकोणों को समझें, प्रस्तुत करें और स्वस्थ तर्क के साथ असहमति को स्वीकार करना सीखें। इससे समावेशी और लोकतांत्रिक शैक्षणिक वातावरण का निर्माण होता है।

7.4 तकनीकी पारदर्शिता और नीति-निर्माण - सरकार और नीति-निर्माताओं को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वे एल्गोरिदम में पारदर्शिता लाएँ और उपयोगकर्ताओं को विकल्प दें कि वे विविध सूचनाओं को कैसे देखें। ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*** एवं ***डिजिटल इंडिया*** जैसे पहल भी सूचना तक लोकतांत्रिक पहुँच को सुनिश्चित करने की बात करते हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि सरकार और नीति-निर्माता सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से अपेक्षा करें कि वे अपने एल्गोरिदम की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता लाएँ। साथ ही, उपयोगकर्ताओं को यह विकल्प प्रदान किया जाए

कि वे किस प्रकार की सूचनाएँ देखना चाहते हैं—सिर्फ पसंदीदा नहीं, बल्कि विविध दृष्टिकोणों वाली जानकारी भी। यह तकनीकी लोकतंत्र और डिजिटल साक्षरता दोनों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

7.5 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम - आज के समय में केवल विषयवस्तु-ज्ञान तक सीमित नहीं रह सकते, बल्कि उन्हें डिजिटल माध्यमों की आलोचनात्मक समझ से भी समृद्ध किया जाना चाहिए। ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*** में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि शिक्षकों को 21वीं सदी की आवश्यक दक्षताओं से लैस किया जाए। इसके अंतर्गत शिक्षकों को यह प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि वे सोशल मीडिया, इंटरनेट स्रोतों, और एल्गोरिदम की कार्यप्रणाली को समझें, उनके प्रभावों का मूल्यांकन करें, और विद्यार्थियों को गलत सूचना, पूर्वाग्रह व ईको चैंबर जैसे डिजिटल जोखिमों से सतर्क कर सकें। इस प्रकार शिक्षक डिजिटल युग के प्रभावी मार्गदर्शक बन सकेंगे।

8. निष्कर्ष :

ईको चैंबर की अवधारणा डिजिटल युग की जटिल सामाजिक वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करती है। जहां एक ओर यह सूचना की सुलभता और संवाद के लोकतंत्रीकरण की उपलब्धियों को दर्शाता है वहीं दूसरी ओर यह वैचारिक संकीर्णता, ध्रुवीकरण, और आलोचनात्मक चिंतन में ह्रास जैसी समस्याओं को भी जन्म देता है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए विविध दृष्टिकोणों को आत्मसात करने, तर्क और विवेक के साथ विचार करने, तथा सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता को समझने की क्षमता विकसित करती है। अतः यह अनिवार्य है कि शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण पद्धतियाँ और पाठ्यचर्या इस डिजिटल युग में छात्रों को ईको चैंबर की सीमाओं से बाहर लाने हेतु सजग और सक्रिय भूमिका निभाएँ।

9. सुझाव :

- विद्यालयों और कॉलेजों में डिजिटल साक्षरता को अनिवार्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।
- छात्रों को ऑनलाइन सूचनाओं की सत्यता जांचने और फेक न्यूज की पहचान करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- एक ही विषय पर विविध स्रोतों से जानकारी एकत्र करने की आदत को विकसित किया जाना चाहिए।
- पुस्तकालयों, डिजिटल आर्काइव और विश्वसनीय ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स तक विद्यार्थियों की पहुँच सुनिश्चित की जाए।
- पाठ्यक्रम में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक दृष्टिकोणों को स्थान देकर बहुलता को बढ़ावा दिया जाए।
- वाद-विवाद, समूह चर्चा और विचार मंचों को नियमित रूप से आयोजित किया जाए।
- शिक्षकों को तकनीकी दक्षता के साथ-साथ डिजिटल आलोचनात्मक समझ से युक्त करने हेतु विशेष प्रशिक्षण दिए जाएं।
- शिक्षक प्रशिक्षण में मीडिया साक्षरता, एल्गोरिदमिक पक्षपात और ऑनलाइन सुरक्षा पर भी ध्यान दिया जाए।
- कक्षा में संवाद, तर्क और असहमति को सम्मान देने वाली संस्कृति को प्रोत्साहित किया जाए।
- छात्रों को आलोचनात्मक चिंतन, सहिष्णुता और विवेकपूर्ण निर्णय की दिशा में निरंतर मार्गदर्शन दिया जाए।

10. संदर्भ (References):

1. Sunstein, C. R. (2001). ***Echo chambers: Bush v. Gore, impeachment, and beyond***. Princeton University Press. https://press.princeton.edu/books/hardcover/9780691095899/echo-chambers

Pariser, E. (2011). ***The filter bubble: What the internet is hiding from you***. Penguin Books. https://www.penguinrandomhouse.com/books/307769/the-filter-bubble-by-eli-pariser/

2. Boyd, D. M., & Ellison, N. B. (2007). Social network sites: Definition, history, and scholarship. ***Journal of Computer-Mediated Communication, 13***(1), 210–230. https://doi.org/10.1111/j.1083-6101.2007.00393.x
3. Ministry of Education, Government of India. (2020). ***National Education Policy 2020***. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
4. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2023). ***National Curriculum Framework for School Education (NCF 2023)***. https://ncf.ncert.gov.in/
5. UNESCO. (2021). ***Global education monitoring report: The role of social media in education***. https://www.unesco.org/reports/global-education-monitoring-report/2021/social-media
6. Tufekci, Z. (2015). Algorithmic harms beyond Facebook and Google: Emergent challenges of computational agency. ***Colorado Technology Law Journal, 13***(203), 203–218. https://ctlj.colorado.edu/?p=133
7. Sharma, P. (2024,). ***Understanding echo chambers***. Medium. https://medium.com/@pratibhaa/understanding-echo-chambers-4615dbffc728
8. Ministry of Education, Government of India. (2020). ***National Education Policy 2020***. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Internet sources:

9. https://en.wikipedia.org/wiki/Echo_chamber_(media)
10. https://edu.gcfglobal.org/en/digital-media-literacy/what-is-an-echo-chamber/1/
11. https://hindi.webdunia.com/my-blog/digital-media-echo-chamber-is-dangerous-for-ideological-diversity-124090500019_1.html